प्राक्कथन

मानव समाज का विकास पुरुषार्थ के जीवन दर्शन के माध्यम से हुआ है। मानव जीवन के अनुगमन का आधार पुरुषार्थ है जिसका एक प्रधान तत्व 'अर्थ' है। अर्थ, मानव के भौतिक जीवन में वस्तुओं की प्राप्ति एवं उसके द्वारा प्राप्त सुख–संतुष्टि का साधन है। अर्थ के बिना जीविकोपार्जन सम्भव नहीं है। मानव जीवन की समस्त सुविधाएं, कामनाएं एवं भौतिक समृद्धि अर्थ प्राप्ति के द्वारा ही सम्पूर्ण होती है। मनुष्य अर्थ के माध्यम से जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके स्वयं को सुखी एवं सम्पन्न बनाने की चेष्टा में तल्लीन रहता है। मनुष्य को अर्थ उपार्जन के लिए धर्म के अनुसार अनेक क्रिया–कलाप निर्देशित किये गये हैं, जिसमें कृषि, पशुपालन, उद्योग, वाणिज्य–व्यापार इत्यादि गतिविधियाँ समाहित हैं। इनको आर्थिक जीवन का मूलाधार माना जाता है। इन प्रक्रियाओं से सम्बन्धित कार्य्रक्रमों का सफलतापूर्वक निष्पादन करके मनुष्य अर्थ उपार्जित करता है जो उसके भौतिक एवं लौकिक सुख–शान्ति का साधन है। निश्चित काल एवं परिस्थितियों के अन्तर्गत मानव जीवन के मूलाधार से सम्बन्धित कृषक, औद्योगिक एवं व्यापारिक वर्ग द्वारा निश्चित कार्यक्रमों को सम्पन्न करके समाज को पोषित करने की आवश्यकता होती है। इस वर्ग के प्रत्येक सदस्यों में कर्तव्यपालन एवं कार्यनिष्पादन कर आर्थिक प्रक्रमों को समुन्नत एवं सम्पन्न बनाने की प्रवृत्तियाँ प्रत्येक युग में सहज रूप से स्वभावतः उद्भूत होती रहती है जो समाज को आत्मनिर्भर, सम्पन्न एवं पुष्ट बनाने में सहयोग करती है।

सभ्यता के विकास के साथ परिस्थिति यहाँ तक पहुँची कि प्रत्येक गाँव, नगर व प्रदेश एक दूसरे पर निर्भर होते गये। इस प्रकार आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं को एक से दूसरे स्थान, गाँव, नगर में पहुँचाने या ले आने–ले जाने के रूप में व्यापार का उद्‌भव हुआ। इसी प्रकार राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रादुर्भाव हुआ। धीरे–धीरे यह व्यापार समृद्धि का साधन बन गया। मानव समझौते एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण से अर्थोपार्जन की गतिविधियों में सम्मिलित होकर अपनी आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के साथ–साथ धनार्जन करने लगा। व्यापारिक गतिविधियों की निरन्तरता से व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ। एक से दूसरे स्थान एवं नगर पर विविध वस्तुओं को ले जाने के लिए घोड़े, रथ, बैल, बैलगाड़ी, ऊँट, हाथी, खच्चर आदि का उपयोग होने लगा। नदी एवं सामुद्रिक मार्गों में नाव, जहाज एवं पोत प्रयुक्त होने लगे।[1] व्यापारिक गतिविधियों में वणिक, वणिज, सार्थ, सार्थवाह, श्रेणी, श्रेष्ठी, निगम इत्यादि की महत्वपूर्ण आर्थिक संगठनों ने अपना महत् योगदान देना प्रारम्भ किया। आर्थिक नियोजन की आवश्यकता को राजाओं ने अनुभव किया और राजाओं ने अपनी हितकारी योजनाओं में सम्पूर्ण आर्थिक प्रक्रियाओं को नियोजित स्वरूप प्रदान किया। जिसके अनन्तर व्यापारिक वर्ग को राज्य द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया। कालान्तर में देश–विदेश के विभिन्न नगरों एवं बन्दरगाहों में विविध प्रकार के व्यापारिक माल का आयात–निर्यात किया जाने लगा। इस प्रकार व्यापारिक गतिविधियाँ संचालित कर व्यापारीगण समाज में आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति कर अधिकाधिक अर्थ उपार्जित करने लगे।

फलतः मौर्य काल तक आखेटयुग (पाषाण काल–आदिकाल), कांस्य प्रयोक्ता प्रथम शहरी सभ्यता (सैंधव सभ्यता का काल – 2500 से 1500 ई.पू.), पशुचारक कृषक समाज (ऋग्वैदिक काल – 1500 से 1000 ई.पू.), हल आधारित खेतिहर समाज (उत्तर वैदिककाल – 1000 से 600 ई.पू.), द्वितीय शहरी सभ्यता विकासमान युग (बौद्ध काल – 600 से 322 ई. पू.), राज्यनियंत्रित अर्थव्यवस्था काल (मौर्य युग 322 से 185 ई.पू.) के अनन्तर भारत राष्ट्र ने अपने आर्थिक संगठन एवं नियोजन की वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से नियंत्रित, विकसित समृद्धि को प्राप्त किया।

नक्षत्रमतिपृच्छन्तं बालमर्थोनातिवर्तते ।
अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः ।।
नाधनाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्नरायत्नशतेरपि ।
अर्थरर्धाः प्रबध्यन्ते गजाः प्रतिगजैरिव ।।

(कौटिल्य अर्थशास्त्र, 9.4)

अर्थात् जो मूर्ख धन प्राप्ति के लिए भाग्य या ग्रह की पूछताछ करता है उसे धन कभी प्राप्त नहीं होता। धन का ग्रह तो धन है। उसमें ग्रह और नक्षत्र क्या करेंगे। जिनके पास धन नहीं होता उन्हें कभी धन नहीं मिलता। जैसे हाथी हाथी को खींच लाता है वैसे ही धन धन से खिंचता है।

मौर्य कालीन अर्थशास्त्र की इस धारणा ने समाज में अर्थशास्त्र की नवीन मान्यताओं को स्थापित किया। राज्य एवं समाज में एक नवीन क्रान्ति को जन्म दिया। वर्तमान अध्ययन मौर्य कालीन आर्थिक संगठन एवं नियोजन पर आधारित है।

बाबा विश्वनाथ की असीम अनुकम्पा, गुरुजनों के विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन, माता–पिता के आशीर्वाद, सुहृदजनों के प्रेरणा एवं सहयोगियों के सहयोग से प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सका है। आपसब के प्रति आभार ज्ञापित करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपनी निर्देशिका ***डॉ. (श्रीमती) कमलेश दूबे,*** *प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, एवं सहायक अधिष्ठाता प्रशासन, श्री अग्रसेन कन्या स्वायत्तशासी पी.जी. कॉलेज, वाराणसी के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनके कुशल निर्देशन एवं विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध पूर्ण हुआ। आपके पूर्ण सहयोग, सतत–प्रेरणा, सानिध्य एवं अपार स्नेह का ही प्रतिफल प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध है। अपने बहुमूल्य समय में से कुछ पल निकालकर आपने शोध–प्रबन्ध की पाण्डुलिपियों का अनुशीलन किया तथा उचित दिशा–निर्देश दिया। इसके लिए मैं आपसे कभी भी उऋण नहीं हो सकता।*

श्री अग्रसेन कन्या स्वायत्तशासी पी.जी. कॉलेज, वाराणसी की प्राचार्या ***डॉ. कृष्णा निगम*** *ने महाविद्यालय के उच्च शैक्षणिक कार्यों एवं गतिविधियों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी मुझे शोधकार्य पूर्ण करने के लिए सदैव प्रेरित करती रहीं एवं मुझे आत्मसम्बल प्रदान किया। उनके प्रति मैं श्रद्धावनत व ऋणी हूँ।*

मैं ***डॉ. गीता श्रीवास्तव,*** *विभागाध्यक्षा एवं संकायाध्यक्षा, कला संकाय, श्री अग्रसेन कन्या स्वायत्तशासी पी.जी. कॉलेज, वाराणसी के प्रति स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।*

मैं अपने विभाग के समस्त प्रवक्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ, जिनका प्रेरणापूर्ण सहयोग मुझे अपने शोध अध्ययन के दौरान प्राप्त हुआ है।

मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ, जिनकी कृतियों से मैं लाभान्वित हुआ हूँ।

मैं अपने पूज्य पिता ***श्री रामनगीना सिंह यादव,*** *प्रधानाचार्य, किसान इण्टर कालेज तथा प्रबन्धक, किसान विधि महाविद्यालय, मुड़ियारी, जखनिया, गाजीपुर (उ.प्र.) एवं पूजनीया माताजी* ***श्रीमती रेशमी देवी,*** *प्रबन्धक, रामनगीना किसान पी.जी. कॉलेज, मुड़ियारी, जखनिया, गाजीपुर (उ.प्र.) के प्रति ऋणी एवं नतमस्तक हूँ जिन्होंने अपने त्याग, धैर्य, स्नेह, आशीर्वाद रूपी अमृत से मुझे हमेशा सींचा, व उच्च शिक्षा के लिए मुझे सदैव प्रोत्साहित किया। यह शोध पुष्प उन्हीं की तपस्या का फल है। परम आदरणीय बड़े पिताजी* ***श्री रामचन्द्र सिंह यादव,*** *अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य, के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिनकी प्रेरणा व आशीर्वाद से मैं अपना यह दुरुह कार्य सम्पन्न कर सका।*

मैं अग्रज तुल्य ***श्री जोखन सिंह यादव*** *(कार्यालय अधीक्षक, रामनगीना किसान पी.जी. कॉलेज, मुड़ियारी, जखनिया, गाजीपुर (उ.प्र.) के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे सदैव शोधकार्य पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित किया।*

मैं अपने अग्रजद्वय ***श्री जितेन्द्र कुमार यादव,*** *शोध–छात्र, इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं* ***श्री देवेन्द्र कुमार यादव*** *(सहायक अध्यापक) के प्रति श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापित*

करता हूँ जिनके प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग से यह दुरुह कार्य सम्पन्न हुआ। अनुज श्री अमित कुमार (अध्ययनरत इलाहाबाद विश्वविद्यालय), शोध कार्य में यथासम्भव सहयोग के लिए आशीर्वाद का पात्र है।

शोध प्रबन्ध के कम्पोजिंग कार्य हेतु **'शिवम् कम्प्यूटर्स'** के **श्री देवेन्द्र कुमार** (मो. 9415290512) के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अल्प समय में इसे सम्पन्न कर अंतिम स्वरूप प्रदान किया।

Ashok

(अशोक कुमार)